

अब राम नहीं आएंगे

है ब्राह्मण –

समेट लो अब अपने शास्त्र,
रख दो मौन वेदों का गान,
उठाओ शस्त्र, साधो अब बाण,
जिन शिव की करते हो तुम गुहार –
अब वही रचेंगे तांडव अपार।

तुम जो बैठे हो उम्मीद लिए
भ्रष्ट सत्ता के द्वार,
सुन लो –
अब तुम्हारे बचे मंदिर भी
तोड़े जाएंगे बारम्बार।

है अहीर –

मत ओढ़ो आभा जात की,
ना दो दुहाई यदुवंश की बात की।
जब तेरी पाली गईया का लहू बहेगा,
तेरी बहन को घसीट कर
घोष्ठ से ले जाया जाएगा।

अब समय नहीं कृष्ण के आने का,
अब नीति है – महाभारत रचाने का।

है राजपूत –

मत सहलाओ शान से सजी मूंछों को,
क्या भूल गए घोरी का प्रहार?
या मुगलों की जलाई चिताएं,
प्रथ्वीराज का अपमान,
और सती का बलिदान?

है दलित -

अगर कोई सहनशील है,
तो वो तू है - तेरी ही यह शान है।
तूने पीठ पर पत्थर रखकर
अपने अपनों का बोझ ढो लिया,
धर्म की खातिर तूने
हर ज़ुल्म को सह लिया।

जब अपने ही सिले घावों को
आतंक ने रौंद डाला,
तब भी तूने उन्हें गंगा सी
शांति से बहा डाला।
जब न्याय की छाँव न मिली कभी,
तो अन्याय से डर कैसा?
जिन घाटों पर लाशें जलीं
हरि को साक्षी बनाकर -
उन घाटों में फिर
फरेबियों से भय कैसा?

यह कलियुग की धारा है,
जहाँ कहीं कोई सहारा नहीं,
यहाँ रावण का किला खड़ा है -
और अग्रिपरीक्षा फिर से होना तय है सीता!

अब युद्ध करना होगा -
क्योंकि राम अब नहीं आएंगे।